6

परमेश्वर का परिवार

''इसलिए तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए''(इफिसियों 2:19)।

यदि आपको एक कागज़ पर मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर द्वारा दी गईं दस सबसे अधिक संतुष्ट करने वाली आशिषों की सूची बनाने के लिए कहा जाए तो आप कौन-कौन सी आशिषों के नाम लिखेंगे? आपके विचार से मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर की सबसे अच्छी और सहायक आशिषें कौन सी हैं?

मेरा मानना है, कि बहुत से लोग सबसे पहले परिवार की आशीष को लिखेंगे। अदन की वाटिका में इसके आरम्भ से लेकर हाल ही के किसी विवाह समारोह तक परिवार के द्वारा असंख्य आशिषें तथा सम्बन्ध मिल चुके हैं। अधिकतर लोग सम्भवत: यह कहेंगे कि उनकी बहुत सी अच्छी यादें उनके घरों से ही जुड़ी हैं जिनमें वे रहते थे और/या जिनमें वे इस समय रहते हैं। इसके अलावा, मैं यह भी मानता हूं कि कुछ लोगों को छोड़कर सभी यह कहेंगे कि उन्हें जीवन में सबसे बड़ी सामर्थ तथा सहायता अपने परिवार के सदस्यों से ही मिलती है। सचमुच, उस स्वर्गीय प्रेमी पिता ने मनुष्य जाति को परिवार दिया है जिससे उसे प्रेम, सहानुभूति और प्रोत्साहन मिले।

परिवार के हमारे जीवन में महत्व को देखते हुए, हमें इस बात से हैरान नहीं होना चाहिए कि पवित्र शास्त्र में नये नियम की कलीसिया के स्वभाव को दिखाने में हमारी सहायता के लिए इसका इस्तेमाल एक आकार के रूप में किया गया है। पवित्र शास्त्र में ''परिवार'' तथा ''घराना'' शब्द हमें कलीसिया को परमेश्वर के परिवार के रूप में देखने पर विवश करते हैं। मसीही बनने पर, हमारा जन्म परमेश्वर के आत्मिक परिवार अर्थात कलीसिया में होता है (यूहन्ना 3:5; इफिसियों 2:19)। इसे दूसरे शब्दों में कहें, तो जब हम मसीह के सुसमाचार की आज्ञा मानकर मसीह की देह में प्रवेश करते हैं तो परमेश्वर हमें अपनी संतान के रूप में गोद ले लेता है (इफिसियों 1:5)। पौलुस ने गोद लेने की इस बात को अन्तिम परिणाम, अर्थात वह मुख्य कारण कहा जिसके लिए मसीह इस संसार में आया था: ''परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा,

और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल देकर छुड़ा ले, और हमको लेपालक होने का पद मिले'' (गलतियों 4:4, 5)।

आवश्यकताएं

सभी मानवीय जीवों की कुछ मानक आवश्यकताएं होती हैं जो केवल सांसारिक परिवार में ही पूरी हो सकती हैं। वे आवश्यकताएं क्या हैं? पहली, हम में से हर एक को *सम्बन्ध* अर्थात ''परिवार'' *के बोध* की आवश्यकता होती है। सांसारिक परिवार से सामाजिक स्थिरता मिलती है। यह हमें इस संसार में एक सुविधाजनक स्थिति प्रदान करता है जो हमारी और केवल हमारी ही होती है।

दूसरी, हमें *सुरक्षा के बोध* अर्थात इस आश्वासन की आवश्यकता होती है कि मानसिक, सामाजिक या भौतिक आवश्यकता पड़ने पर जिस समाज का हम भाग हैं, वह हमारी सम्भाल करेगा। सांसारिक परिवार हमें यह सुरक्षा प्रदान करता है। यह हमें जीवन के तूफ़ानों से बचने के लिए आश्रय देता है। इसने हमें तब भी आश्रय दिया था जब हम छोटे बच्चे थे या अपनी सम्भाल स्वयं नहीं कर सकते थे। जब हम बीमार या दुखी होते हैं या जब हम बूढ़े और कमजोर होकर दूसरे बचपन में रह रहे होते हैं तब भी यह हमारा आश्रय बनता है। यह हमारी शरणस्थली, आश्रय और हमारी सहायता की चट्टान है।

तीसरी, हमें *पहचान के बोध* की आवश्यकता होती है। हमारे अन्दर यह जानने की लालसा होती है कि हम कौन हैं और क्या हैं। कुछ हद तक, हमारी इस लालसा का उत्तर सांसारिक परिवारों में मिल जाता है।

चौथी, हमें *स्वीकृति के बोध* अर्थात यह जानने की सुनिश्चिता की आवश्यकता होती है कि हम अपने आप में कुछ हो सकते हैं अर्थात हमें किसी श्रृंगार या मुखौटे की आवश्यकता नहीं है। सांसारिक परिवार हमसे इसलिए प्रेम नहीं करता कि हम क्या बनने वाले हैं या क्या थे बल्कि यह हमसे केवल हमारे कारण प्रेम करता है। अपने सांसारिक परिवारों में हमें स्वीकार्य होने के लिए कुछ करने की आवश्यकता नहीं होती है। यदि हम बहुत अच्छा नहीं बन सकते या बहुत अच्छा नहीं कर सकते तो भी इस परिवार के लोग हमसे प्रेम करते हैं और अपने सम्बन्धियों में हमारी एक पहचान होती है। उनसे प्रेम पाने के लिए हमें कुछ करने की आवश्यकता नहीं है अर्थात यह बिन मांगे ही मिल जाता है।

मानवीय जीवों की आत्मिक आवश्यकताएं भी हैं जो सांसारिक परिवार द्वारा पूरी की जाने वाली भावनात्मक, सामाजिक और भौतिक आवश्यकताओं की तरह ही हैं। कुछ लोग इन आत्मिक आवश्यकताओं को अपने आप में महसूस करते हैं जबकि दूसरे लोगों को इनका अहसास भी नहीं होता। हम उन्हें पहचानें या न पहचानें, वे वास्तविक होती हैं और इस संसार में सच्ची प्रसन्नता को पाने के लिए उन्हें पूरा किया जाना आवश्यक है। मानवीय व्यक्तित्व तथा आत्मा की एक आत्मिक दशा भी है। इन विशेषताओं की उपेक्षा या इन्हें अनदेखा करने पर, हमें एक प्रकार की सामाजिक तथा भौतिक प्रसन्नता तो मिल सकती है, पर परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली आत्मिक प्रसन्नता तथा भरपूरी नहीं है।

यदि मैं मकड़ी के जाले को उतारकर सोचूं कि कमरा साफ़ हो गया तो क्या होगा ? इस प्रकार मैं मकड़ी के दूसरे जालों को बार-बार साफ नहीं करता रहूंगा ? मकड़ी जाले बुनती है और जब तक वह मेरे कमरे में रहेगी, जाले बुनती ही रहेगी।

यदि मैं बाथरूम के फर्श पर पानी गिरा हुआ देखूं तो क्या होगा ? यदि मैं केवल झाड़ू मारकर पानी को निकाल दूं तो मैं कितना सफल हो पाऊंगा ? पानी तो कहीं और से आ रहा होगा और जब तक मैं यह न देखूं कि पानी कहां से आ रहा है और उसे बन्द न कर दूं, तब तक मुझे बाथरूम के फर्श से पानी निकालने के लिए झाड़ू मारते ही रहना होगा।

आत्मिक आवश्यकताएं जो हर व्यक्ति की एक जैसी ही हो सकती हैं, खत्म नहीं होतीं। केवल यह कहने से कि वे आवश्यकताएं हैं ही नहीं, हमारी प्यास नहीं बुझ जाती। हमारे लिए सामान्य सांसारिक प्रसन्नता तथा आत्मिक आनन्द पाने के लिए, इन भौतिक तथा आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करना आवश्यक है।

आवश्यकताएं पूरी हुईं

हमारी आत्मिक आवश्यकताएं परिवार की एक दूसरी इकाई अर्थात परमेश्वर के परिवार के द्वारा पूरी की जाती हैं। इस आत्मिक परिवार में, परमेश्वर पिता है (1 यूहन्ना 3:1), मसीही लोग भाई तथा बहनें हैं (1 यूहन्ना 5:1) और यीशु बड़ा भाई है (रोमियों 8:17)। पौलुस ने इस स्वर्गीय परिवार को ''कलीसिया'' कहा है। उसने तीमुथियुस को बताया कि, ''ये बातें तुझे इसलिए लिखता हूं कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले, कि *परमेश्वर का घर* जो *जीवते परमेश्वर की कलीसिया* है, और जो सत्य का खम्भा, और नेव है; उस में कैसा बर्ताव करना चाहिए'' (1 तीमुथियुस 3:14 ,15)।

नये नियम की कलीसिया में एक मसीही व्यक्ति *आत्मिक सम्बन्ध* का अनुभव करता है। वह स्वर्गीय पिता से प्रार्थना कर सकता है। उसके साथ चल सकता है और उसके लिए जी सकता है। उसका एक बड़ा भाई है जिसके द्वारा वह प्रार्थना करता है, उससे सीखता और उस पर निर्भर रहता है। वह विश्वासियों के एक समुदाय के एक भाग की तरह जीवन व्यतीत करता है अर्थात भाइयों तथा बहनों के रूप में एक दूसरे से प्रेम करते हैं और परमेश्वर की महिमा के लिए मिलकर एक संस्था के रूप में नहीं परन्तु एक आत्मिक परिवार की तरह मिलकर काम करते हैं।

परमेश्वर के परिवार में, हमें *आत्मिक सुरक्षा का बोध* होता है। हम जानते हैं कि हमारा स्वर्गीय पिता हम से प्रेम करता है और हमें आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध करवाएगा। वह हमारी भौतिक आवश्यकताओं को भी पूरा करता है। इस विचार से कि उसके अनुयायी किसी बात की चिन्ता न करें, यीशु ने हमसे यह याद रखने का आग्रह किया कि हमारा पिता हमारी आवश्यकताओं को जानता है और वह हमें सम्भालेगा: ''इसलिए तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहनेंगे; क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए'' (मत्ती 6:31-32)। इसी प्रकार, हमारा पिता हमारी आत्मिक आवश्यकताओं को भी पूरा करता है। यहूदा ने हमें इस

स्वर्गीय सम्भाल का स्मरण उस आयत में कराया जिससे उसने परमेश्वर पिता को इस प्रकार दिखाया, ''जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के साम्हने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है'' (यहूदा 24)।

परमेश्वर के परिवार अर्थात कलीसिया में *आत्मिक पहचान के बोध* की हमारी आवश्यकता भी पूरी की जाती है। मन परिवर्तन से पहले, हम उद्देश्य या दिशा रहित इधर-उधर भटकते थे, परन्तु परमेश्वर के परिवार में जन्म लेकर, हम परमेश्वर की अपनी सम्पत्ति बन गए हैं। इस बदलाव को पतरस ने इस प्रकार लिखा है:

> पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो। तुम पहिले तो कुछ भी नहीं थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो: तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई है (1 पतरस 2:9, 10)।

पौलुस ने तो परमेश्वर के परिवार को परमेश्वर की मीरास तक कहा है (इफिसियों 1:18)। परमेश्वर के परिवार के सदस्यों के रूप में, मसीही लोगों को अनन्त मीरास अर्थात स्वर्ग मिलता है; परमेश्वर को भी मीरास अर्थात मसीही लोग मिलते हैं!

ऐसे ही परमेश्वर का परिवार हमारे लिए *आत्मिक स्वीकृति का बोध* कराता है। परमेश्वर के सामने विश्वास से आज्ञा मानकर आने और भरोसे और गम्भीरता से आज्ञा मानकर जीवित रहने पर हमें उसकी संतान के रूप में ग्रहण किया जाता है। वह हम पर अपना विशेष प्रेम दिखाता है और हमारे मनों में आत्मा डालता है, जिससे हम उसे ''हे अब्बा, हे पिता'' कहकर पुकारते हैं (गलतियों 4:6)। मसीह में, हम पौलुस के साथ कह सकते हैं, ''सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं'' (रोमियों 8:1)। इसका अर्थ यह नहीं है कि अब पश्चात्ताप और आत्मिक विकास की आवश्यकता नहीं है बल्कि इसका अर्थ यह है कि हम जैसे भी हैं वह हमें स्वीकार कर लेता है और जो कुछ हमें बनना चाहिए वह बनने में कोमलता से हमारी अगुआई करता है। किसी ने कहा है, ''हम जैसे भी हैं वह हमसे प्रेम करता है, पर वह हमसे इतना प्रेम करता है कि हमें वैसे ही नहीं रहने देता जैसे हम हैं।''

कई वर्ष पूर्व लंदन, इंग्लैंड में एक विवाहित युवती को मसीह में लाने की अपनी कोशिश मुझे अभी भी याद है। वह एक सुन्दर जवान माता थी जिसका एक बच्चा था। विवाह के कुछ माह बाद, उसके पति ने उसे छोड़ दिया था और अब वह अपने बच्चे का पालन-पोषण करने की कोशिश कर रही थी। स्पष्टत:, बचपन से ही उसे घरेलू जीवन में कई संघर्षों को सामना करना पड़ा था। बातचीत करते हुए, मैंने उससे कहा, ''मसीह के द्वारा, तुम्हारा उद्धार हो सकता है और तुम्हें एक सुन्दर घर मिल सकता है!'' मेरी इस बात से वह जरा भी उत्साहित नहीं हुई। मैं हैरान था कि क्या बात थी और फिर मुझे अहसास हुआ

कि इस युवती को पता ही नहीं था कि यह सुन्दर घर क्या होता है। उसने कभी आकर्षक और सुन्दर लगने वाला घर देखा ही नहीं था। उसके अनुभव में समर्थन, उत्साहित करने और प्रेम करने को छोड़ दूसरी बातों से घर की कल्पना थी; उसके लिए सुन्दर घर की बात समझना बहुत कठिन था। परन्तु, जिसने कभी ऐसा घर देखा हो जिसमें सामान्य भौतिक, भावनात्मक और आत्मिक आवश्यकताएं इसके सदस्यों द्वारा पूरी की जाती हों उसे पता होता है कि मसीह की अगुआई में बना सही ढंग से घर कितना सुन्दर हो सकता है।

इस युवती की तरह, बहुत से लोग यह ही नहीं देख पाते हैं कि कलीसिया हमारी आवश्यकताएओं को कैसे पूरा करती है। क्योंकि वे नये नियम की सच्ची कलीसिया के निकट कभी आए ही नहीं। उन्होंने कलीसिया को परमेश्वर के आत्मिक परिवार के रूप में देखा ही नहीं। इसलिए उनके लिए उस बात की जो उन्हें समझ नहीं आ रही कि वे मसीह की कलीसिया से दूर रह रहे हैं, कल्पना करना कठिन है। मसीही लोगों का यह दायित्व बनता है कि वे कलीसिया की आत्मिक स्थिति का लोगों को ध्यान दिलाते रहें और यह भी कि परमेश्वर के परिवार के रूप में सच्ची कलीसिया में हमारे जीवनों के आत्मिक पहलुओं का उत्तर कैसे मिलता है।

केवल परमेश्वर के परिवार के द्वारा ही हमें शांति, सुरक्षा, उद्देश्य और वह पहचान मिल सकती है जिसकी हमारे भीतरी अस्तित्व को आवश्यकता है। इस परिवार अर्थात कलीसिया से बाहर रहकर सच्ची खुशी नहीं पाई जा सकती है।

आवश्यकताएं बड़े अच्छे ढंग से पूरी होती हैं

कलीसिया को परमेश्वर के परिवार के रूप में देखने के लिए हम लूका द्वारा बनाए गए यरूशलेम की कलीसिया के रेखाचित्र पर ध्यान देते हैं। उसके द्वारा बनाए, चित्र में प्रारम्भिक मसीहियों के दैनिक जीवन में परमेश्वर के परिवार की सुन्दर विशेषताओं को दिखाया गया है:

> और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।
> ... और वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं। और वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे। और वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे। और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उन में मिला देता था (प्रेरितों 2:42-47)।

हर मसीही को सम्बन्ध का बोध था, क्योंकि ''वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं'' (प्रेरितों 2:44)। प्रत्येक सदस्य की अपनी एक

पहचान थी, क्योंकि कोई भी अपने आपको एक दूसरे से बड़ा नहीं मानता था और सारी कलीसिया किसी भी पीड़ित सदस्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आगे आ जाती थी। हर एक सदस्य की सुनी जाती थी। दिन-प्रतिदिन लोग प्रभु की देह में मिलाए जा रहे थे और मण्डली उन्हें आनन्द से ग्रहण कर रही थी। प्रत्येक सदस्य सुरक्षित महसूस करता था जो कि एक समुदाय द्वारा प्रदान की गई सुरक्षा से ही हो सकता था। ''वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच-बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी, बांट दिया करते थे।''

परमेश्वर के परिवार की यह मण्डली प्रार्थना, स्तुति, शिक्षा, संगति और प्रभु भोज के द्वारा आराधना में लगी रहती थी (प्रेरितों 2:42)। वे अपने स्वर्गीय पिता की स्तुति करते थे, अनुग्रह के उस दान को समझते थे जो उनके बड़े भाई यीशु मसीह के द्वारा दिया गया था और मन की प्रसन्नता और एकाग्रता में रहते थे। वे कलीसिया के सामुदायिक जीवन की सुरक्षा, इस जीवन के लिए परोपकारी सम्भाल तथा आने वाले संसार में यीशु की ओर से अनन्त जीवन के आश्वासन का आनन्द लेते थे।

कई वर्ष पूर्व एक छोटी मण्डली के लिए एक सप्ताह तक प्रचार करते हुए, मैंने एक छोटे पहियेदार घर पर ध्यान दिलाया जिसे कलीसिया के प्रार्थना भवन से थोड़ा आगे कर दिया गया था। मुझे लगा कि इसे अतिरिक्त क्लास रूम के लिए रखा गया होगा। मैंने एक सदस्य से पूछा, ''तुम्हारा यह पहियेदार घर यहां क्यों रखा गया है?'' उस सदस्य ने मुस्कुराते हुए बताया, ''वह हमारी विधवा के लिए है।'' उसने आगे कहा, ''कुछ समय पहले इस मण्डली के एक मसीही व्यक्ति की मृत्यु हो गई थी, उसकी पत्नी अकेली रह गई है। वह परेशान थी और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। अत: हम इस छोटे से पहियेदार घर को प्रार्थना भवन के निकट ले आए हैं। हमने यह घर उसे रहने के लिए दे दिया है ताकि उसे सुरक्षा मिले और उसकी आवश्यकताएं पूरी हों। वह सेवा किए बिना इसमें नहीं रहना चाहती थी, अत: हमने उसे प्रार्थना भवन की देखभाल का काम दे दिया है।'' इस सदस्य की बात सुनकर मैं सोचने लगा, ''ऐसी अच्छी सम्भाल और सदस्यों की चिंता तो परमेश्वर के परिवार में ही होनी चाहिए।''

सारांश

क्या आप परमेश्वर के परिवार के सदस्य नहीं बनना चाहते? क्या आप महसूस करते हैं कि जब तक आप परमेश्वर के परिवार अर्थात कलीसिया में प्रवेश नहीं करते, तब तक आपका जीवन सम्पूर्ण नहीं हो सकता? उसके परिवार के बाहर, आपको आत्मिक स्थिरता, सुरक्षा, स्वीकृति, तथा पहचान नहीं मिलेगी जो केवल उसके परिवार की सदस्यता होने पर ही मिल सकती है।

अनाथ होने के विचार से ही हर बच्चा कांप उठता है, और वयस्क का हृदय किसी अनाथ को देखकर पीड़ा से पुकार उठता है। अनाथ होना कोई नहीं चाहता, और कोई भी किसी को अनाथ नहीं देखना चाहता। हम मिलकर भी जीवन की क्रूर परिस्थितियों या

मानवीय अन्याय बच्चों के अनाथ होने को रोक नहीं सकते; हम केवल इतना ही कर सकते हैं कि अनाथों के पास प्रेम, सहानुभूति तथा सहायता लेकर जाएं। परन्तु आत्मिक रूप से किसी को भी अनाथ होने की आवश्यकता नहीं है। सुसमाचार के द्वारा कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के परिवार में आ सकता है, उसके बालक के रूप में गोद लिया जा सकता है और वह प्रेम तथा पुत्र होने का अधिकार पा सकता है जो दूसरे सभी बच्चों को मिलता है।

परमेश्वर के परिवार में प्रवेश हमें आत्मिक जन्म लेने से मिलता है। यीशु ने कहा था, ''कि मैं तुझ से सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता'' (यूहन्ना 3:5)। मसीह में विश्वास लाने के लिए (यूहन्ना 8:24), पापों से मन फिराने (प्रेरितों 17:30), मसीह और प्रभु के रूप में यीशु का अंगीकार करने (रोमियों 10:10), और मसीह में बपतिस्मा लेने के लिए (1 कुरिन्थियों 12:13) परमेश्वर के वचन के द्वारा उसका आत्मा हमारी अगुआई करता है। पतरस कहता है, ''क्योंकि तुमने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है'' (1 पतरस 1:23)।

परमेश्वर उन लोगों को अपने बच्चों के रूप में स्वीकार करता है जो जल और आत्मा से जन्म लेते हैं। वह उन्हें अपना आत्मा (गलतियों 4:6), अपने परिवार की आशिषें (इफिसियों 1:3), और अनन्त मीरास (इफिसियों 1:11) देता है। परिणामस्वरूप, परमेश्वर की संतान को आपसी सम्बन्ध, सुरक्षा, स्वीकृति तथा पहचान का बोध रहता है।

क्या आप मसीह में परमेश्वर की संतान बन गए हैं?

अध्ययन एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. वे कौन-कौन से आनन्द हैं जो घर के कारण आपको मिले हैं।
2. परमेश्वर के परिवार में आने का ढंग बताएं?
3. परमेश्वर हमें अपने बच्चों के रूप में कब गोद लेता है?
4. उन मानक आवश्यकताओं की सूची बनाएं जो प्रत्येक व्यक्ति की हैं, और वर्णन करें कि परिवार में वे आवश्यकताएं कैसे पूरी होती हैं।
5. हमारी आत्मिक आवश्यकताओं के साथ मानक मानवीय आवश्यकताओं की तुलना करें।
6. उस आत्मिक परिवार का वर्णन करें जिसका एक मसीही व्यक्ति भाग है।
7. परमेश्वर का परिवार हमें आत्मिक सुरक्षा कैसे देता है?
8. परमेश्वर का परिवार हमें आत्मिक सम्बन्ध का बोध कैसे कराता है?
9. परमेश्वर के परिवार में हमें आत्मिक पहचान कैसे मिलती है?
10. परमेश्वर के परिवार में हमें आत्मिक स्वीकृति का बोध कैसे होता है?
11. यह दिखाने के लिए कि कलीसिया हमारी आत्मिक आवश्यकताएं कैसे पूरा करती है यरूशलेम की कलीसिया एक उदाहरण कैसे है?
12. क्या कोई परमेश्वर के आत्मिक परिवार में प्रवेश किए बिना सिद्ध बन सकता है?
13. क्या परमेश्वर के परिवार के बाहर व्यक्ति किसी अनाथ की तरह है?
14. वे कौन-कौन सी आशिषें हैं जो विशेषकर आपको परमेश्वर के परिवार में मिली हैं।